Received 8438
5/2/2002

तित्थयर

॥ जैन भवन ॥

वर्द्धमान महावीर माता त्रिशला की गोद में

वर्ष : २५ अंक : १०
जनवरी २००२

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २५ | अंक - १०, जनवरी | २००२

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007 Phone : 238-2655, e-mail : jbhawan@cal3.vsnl.net.in

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —

Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007

Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,

for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,

Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 238-2655 and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street Kolkata - 700 007 Phone : 241-1006

॥ जैन भवन ॥

संपादन

श्रीमती लता बोथरा

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	उद्योग प्रबन्धन का आधार महावीर दर्शन	श्रीमती लता बोथरा	४६७
२.	कर्म की कहानी	पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी	४७४
३.	मलयासुन्दरी		४८८

कवरपृष्ठ : स्वर्गीय हीराचन्द दुगड़ द्वारा चित्रित एवं श्री जयन्त दूगड़ के सहयोग से प्राप्त चित्र में भगवान् महावीर माता त्रिशला की गोद में।

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

उद्योग प्रबन्धन का आधार महावीर दर्शन

श्रीमती लता बोथरा

आदि संस्कृति के सृष्टा ऋषभदेव के समय से ही प्रकृति ने मानव की सुख सुविधाओं में आमूल परिवर्तन ला दिया था। जब रोजाना का जीवन यापन ज्ञान के अभाव में कठिन हो गया था तब ऋषभदेव ने जहां एक ओर पुरुषों के ७२ और स्त्रियों को ६४ कलाओं की शिक्षा देकर इस स्थिति से उबारने का प्रयास किया वहीं दूसरी ओर उन्होंने जान लिया था कि मानवीय सभ्यता और संस्कृति के सर्वांगीण विकास के लिये मनुष्य की आयु का काल बहुत कम है अतएव उन्होंने मानव को चेतावनी दी कि वह एक पल भी बर्बाद न करके सर्वांगीण विकास के लिये प्रयत्न करे और अन्त में मोक्ष को प्राप्त करे। भगवान महावीर ने आज से २६०० वर्ष पहले जब श्री गौतम गणधर को अपने उपदेशों में स्पष्ट रूप से कहा – **जैसे ओस की बूँद पत्ते पर अल्प समय तक ही ठहरती है वैसे ही मनुष्य जीवन भी अत्यन्त अस्थिर है इसलिये पल भर का भी प्रमाद नहीं करो।** यह पढ़कर ऐसा लगता है कि आदि संस्कृति का यह मूल मंत्र आगे चलकर मनुष्य के सारे क्रिया कलापों की आधारशिला बनने वाला था और वास्तव में यह हो भी गया।

उद्योग और वाणिज्य के क्षेत्र में विश्व विख्यात विद्वान Peter F Drucker अमेरिकी विद्वान **डा० लायर्ड** एवं **नेपोलियन हिल** जैसे मनीषियों ने जब प्रमाद को दूर रखकर समय के एक-एक क्षण का समुचित उपयोग करने की सलाह प्रबन्धकों को दी तो वास्तव में वो आदि संस्कृति के इसी सूत्र को दोहरा रहे थे। दो सैंट की **नोट बुक** पर दिन भर किये जाने वाले कार्यों की तालिका और उसके अनुरूप कार्यों का सम्पादन समय की उपयोगिता निश्चित करने का एक सशक्त साधन बन गया है। वर्तमान जर्मनी का गठन करने वाले **प्रिंस विस्मार्क** एक क्षण भी बर्बाद नहीं करते थे। **बाईबिल** की पुस्तक में रखे हुए एक कागज पर उनके सारे कार्य लिखे होते थे। जमशेद जी टाटा, घनश्यामदास बिरला के सफलता पूर्वक निकाय प्रबन्धन में समय की उपयोगिता के इस सूत्र ने आश्चर्य जनक परिणाम दिखाया है।

वर्तमान प्रबन्धन में समय की उपयोगिता की अहमियत हमारे आदि मनीषियों ने उस समय भी जान ली थी और यहीं कारण था कि उन्होंने इस सिद्धान्त का इतनी प्रखरता से प्रतिपादन किया। गणधरों की स्थापना से साधुओं तक की स्थापना तक एक ऐसा प्रबन्धक तन्त्र बनाया गया जिसकी तुलना आज के निकाय प्रबन्धन के **मास्टर माइन्ड ग्रूप** से सहज की जा सकती है।

वर्तमान उद्योगों की सफलता के पीछे इस ग्रुप का बहुत बड़ा योगदान रहा है। **Peter F. Drucker 'The Practice of Managemet'** किताब में लिखते है कि —

The manager is the dynamic, life giving element in every business without his leadership the resources of production remain resources and never become production.

अपनी मानसिक विचारधारा और अपनी ही कार्यशैली के प्रति प्रतिबद्ध लोगों का चयन करके एक ऐसे ग्रुप का निर्माण किया जाता है जो उद्योगों के सारे कार्य सुचारु रूप से सम्पादित करके सफलता प्राप्त कर सकते हैं। नेपोलियन हिल नामक विचारक ने अपनी पुस्तक **Law of success** में इसका विशद् वर्णन किया है। अमेरिका में एक समय में लोहे के बेताज बादशाह **Andrew Carnegi** ने **नेपोलियन हिल** को दिये अपने साक्षात्कार में अपनी अभूत पूर्व औद्योगिक सफलता के पीछे **चार्ल्स वेब** जैसे साथियों के कार्यों का विशद् रूप से वर्णन किया है। भगवान् महावीर ने गणधरों से लगा कर श्रुत केवली, आचार्य, उपाध्याय और साधु का प्रावधान करके हर स्तर पर इस प्रकार के लोगों का निर्माण किया जो अपनी मानसिक दक्षता के आधार पर उनके कार्यों को आगे बढ़ा सके। भगवान् महावीर के बाद धर्म सभाओं का आयोजन तथा श्रुत केवलियों से लगा कर श्रमणों की भागेदारी ने समय-समय पर वैचारिक एवं सिद्धान्तिक क्रान्ति की धारा को अक्षुण्य रखा यही कारण है कि आज भी भगवान् महावीर का यह सिद्धान्त हर सफल उद्योग में कार्यान्वित किया जा चुका है।

कतिपय आगे आने वाले समय में कुछ बौद्ध भिक्षुओं ने आदि संस्कृति की तपस्या की काफी आलोचना की। शरीर की शुद्धि, इन्द्रियों का निग्रह एवं आत्मा के नैसर्गिक गुणों के विकास के लिये महावीर ने तपस्या को एक अमोघ अस्त्र माना। आज जब **नेपोलियन हिल** जैसे दार्शनिक जब व्यक्ति के सर्वांगीण विकास की बात करते है तो वे स्वस्थ मन के लिये स्वस्थ शरीर को आवश्यक मानते है। आज तो विश्व के बड़े से बड़े चिकित्सक भी शरीर और आत्मा की शुद्धि के लिये तपस्या को सबसे अमोघ अस्त्र मानते है। स्वस्थ मन जो कि सर्वांगीण विकास का प्रथम सोपान है उसकी प्राप्ति के लिये आजका व्यावसायिक जगत अपने प्रबन्धकों पर करोड़ो रूपये खर्च करता है। यदि इस क्षेत्र में विशेषज्ञों द्वारा बताये गये नियमों का विश्लेषण किया जाय तो यह स्पष्ट दृष्टिगोचर होगा कि ये अधिकांशतयः वहीं हैं जो २६०० वर्ष पहले भगवान् महावीर ने आत्म विकास के क्षेत्र में अपरिहार्य माने थे। ऐसा अपूर्व सामन्जस्य है कि आत्म शुद्धि का ये मूल मन्त्र समय के अन्तराल में भौतिक जीवन की आधार शिला भी बन गया।

आदि संस्कृति ने हजारों वर्षों पहले इस आवश्यकता को समझ लिया था । इसमें समय के अन्तराल में आयी शिथिलता को भगवान महावीर ने झंझोड़ा और समता की प्राप्ति हेतु ध्यान की प्रक्रिया को परिमार्जित कर उसका उपयोग बताया। संसार की सारी साधना और ध्यान का केन्द्र बिन्दु समता है। समता जहां ना राग है ना द्वेष केवल चित्त की एकाग्रता है ऐसी सरल क्रिया महावीर ने दी जिसकी सार्थकता आज भी बरकरार है।

भगवान् महावीर ने आत्म शुद्धि के नाम पर तपस्या की अनुशंसा ही नहीं की वरन् अपने जीवन में इसका पालन करके अपने अन्दर विलक्षण शक्ति की उत्पत्ति की। उनकी जीवन चुम्बकीय आकर्षण **शक्ति** इतनी प्रबल थी। कि गौशाला जैसे साधक उनको अंपने प्रयोग से तनिक भी क्षति न पहुँचा सके। चण्डकौशिक नामक विषधर सर्प उनको काट कर उनके शरीर से निकले रक्त में मीठे दूध की अनुभूति पा रहा था। यह सब तपस्या का ही परिणाम था। क्या आपने किसी महान सफल उद्योगपति को जीभ की लोलुपता का शिकार होते सुना है। संतुलित भोजन, पेट के अवयवों को

दीर्घविश्राम आज की वैज्ञानिक पद्यति के अनिवार्य निर्देश हैं। जैन श्रावक खाने में समय की पाबन्दी का उल्लंघन कदापि नहीं करता। सूर्य अस्त के पूर्व वह भोजन ग्रहण कर लेता है। जैन धर्म की हजारों वर्षों पुरानी इस परम्परा को हजारों वर्षों के अन्तराल के बाद आज के स्वास्थ्य विज्ञान ने भी मान्यता दी है। **यूरोप और अमेरिका** में अधिकांश प्रबन्धक सायं के ६.३० बजे शाम के भोजन से निवृत्त हो जाते है। जैन दर्शन का वर्तमान प्रबन्धन क्षेत्र में यह एक सीधा प्रभाव है।

भगवान् महावीर ने समय की उपयोगिता की मीमांसा में सूर्योदय के ४८ मिनट पहले ब्रह्म मुहूर्त्त में कार्य शुरु करने की अनुशंसा की थी। **डा० लियर्ड** की किताब में जब मैंने उसके द्वारा दिया गया सुबह के समय उर्जा का स्तर पढ़ा तो २६०० वर्ष पुराने भगवान् महावीर के सिद्धान्त की सार्थकता सामने आ गयी। उर्जा के स्तरों का विश्लेषण करते हुये **डा० लियर्ड** के अनुसार इस विषय पर किये अनुसंधान से स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि उर्जा का स्तर प्रातः काल में काफी ऊँचा रहता है।

डा० लियर्ड ने यह अनुसंधान ही नहीं बल्कि ब्रह्मबेला में कार्य शुरू करने वाले विश्व के अति सफल व्यक्तियों के जीवन के विषय में भी काफी प्रकाश डाला है जो अपनी इस आदत के कारण उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच सकें।

जीवन को यशस्वी बनाने की कला में और उसके सर्वांगीण विकास के लिये भगवान् महावीर ने जो मूलभूत सिद्धान्त प्रतिपादित किये उनमें पंच महाव्रतों का प्रमुख स्थान था। वे केवल मोक्ष की कल्पना के सोपान ही नहीं थे बल्कि इसी जगत में जीवन के सम्पूर्ण विकास के लिये सफलता की कुंजी भी थे। उद्योग और व्यापार का प्रबन्धन सर्वांगीण जीवन का एक हिस्सा ही है। राजनीति से लेकर उद्योगिक जगत तक सत्य और अचौर्य की अवहेलना कर बनायी गयी इमारतें बालू की भीत पर टिकी हुई दिखायी पड़ती हैं।

इसी प्रकार यदि हम विश्व की आर्थिक समस्याओं पर दृष्टि डालें तो ऐसा लगता है कि भगवान् महावीर के अपरिग्रह के सिद्धान्त को जब-जब विश्व ने भुलाया तब-तब उसे विनाश के कगार पर खड़े पाया गया। भगवान्

महावीर की 'जीयो और जीने दो' के सिद्धान्त की अवहेलना १८वीं शताब्दी के अन्त में तथा १९वीं शताब्दी के प्रारम्भ में औद्योगिक क्रान्ति से उपजे व्यक्तिवाद ने की। विश्व को फलस्वरूप प्रथम महायुद्ध की विभीषिकाओं से गुजरना पड़ा। मानव का शोषण तथा साधनों का अनैतिक दोहन उपनिवेशवाद की आड़ में साम्राज्यवादी सिद्धान्त जो प्रबन्धन के क्षेत्र में सबसे प्रभावी कार्यशैली रही थी। जब लींग ऑफ नेशन्स उस पर नहीं चल सकी और आसुरी शक्तियों के सामने **इंग्लैड** के तत्कालीन प्रधान मंत्री चेम्बर लेन ने म्युनिख में घुटने टेक दिये तो उसी समय विश्व का भविष्य द्वितीय महायुद्ध के आगोश में जा चुका था। ये केवल राष्ट्रो की दुर्दशा नहीं थी वरन् निकायों का प्रबन्धन भी इससे ग्रसित था और सन् १९३८ की मन्दी में हजारों कम्पनियां सदैव के लिये नक्शों से मिट गयी। क्या हमने कभी यह कल्पना की थी कि संसार के किसी एक मनीषी के एक सिद्धान्त की अवहेलना विश्व के लिये इतना बड़ा संकट पैदा कर सकती है। हमने अपनी अक्षमताओं के फलस्वरूप इन सिद्धान्तों को भगवान महावीर के सिद्धान्त न समझा हो परन्तु इससे सिद्धान्त की उपयोगिता या प्रासंगिकता पर कोई असर नहीं पड़ता।

भगवान् महावीर की अहिंसा को कायरता की संज्ञा देने वाले विश्व के कुछ विद्वान अहिंसा की यही परिभाषा खोजने के भ्रमजाल में सदियों से पड़े रहें और इस बीच में विश्व भूल गया अहिंसा का यथार्थ स्वरूप । मन, वचन और काया से किसी को नुकसान न पहुँचाना ही केवल अहिंसा नहीं है बल्कि विश्व को आतंकियों से मुक्ति दिलाना भी अहिंसा का एक हिस्सा है। यदि विश्व ने हिटलर और मुसोलिनी के प्रति तुष्टीकरण की नीति अपनायी तो आगे चलकर उनको इसका खामिजाना चुकाना पड़ा। यदि उद्योग और व्यापार ने गलत नीतियों के सामने एवं गलत लोगों के सामने आत्मसमर्पण किया तो वे विश्व के नक्शे से सदा के लिये मिट गये। न्याय, सत्य, अहिंसा, अचौर्य, अपरिग्रह के भगवान् महावीर के सिद्धान्तों को जब-जब तिरोहित करने की कोशिश की गयी विश्व को उसकी कीमत चुकानी पड़ी।

इन्द्रियों का निग्रह ब्रह्मचर्य का आधारभूत सिद्धान्त है। संतुलित यौन जीवन आज समय की मांग बन चुकी है। जब बड़े-बड़े मनोविज्ञानिक परामर्शदाता औद्योगिक प्रबन्धन क्षेत्र के मैंनेजर के जीवन की आदर्श शैली

की चर्चा करते है तो अनुशासित यौन सम्बन्ध सबसे पहले सामने आते हैं। इस क्षेत्र में नारी जाति का उत्पीड़न आज विश्व के सभी राष्ट्रों को चिन्तित किये हुए है और प्रबन्धन क्षेत्र में इस विषयपर कठोर कदम उठाये जा रहे है। यह एक शुभ संकेत है और भगवान् महावीर के पांचवे व्रत ब्रह्मचर्य की उपयोगिता और व्यवहारिकता सिद्ध करता है।

प्रबन्धन के क्षेत्र में कालचक्र का सर्वोपरि आयाम हर पल का लेखा जोखा रखने की महावीर की अनुशंसा, तपस्या द्वारा शरीर और मन का उस हद तक विकास जहां वह प्रबन्धन के क्षेत्र में महत्ती सफलताएं अर्जित कर सकें, निश्चित समय पर सुपाच्य खाना खा कर शरीर को सही उर्जा प्राप्त कराके दैनिक जीवन में उपलब्धियों की प्राप्ति, उद्योग और व्यापार की सफलता के लिये एक प्रखर सहभागी लोगों के ग्रुप का निर्माण, जो भगवान् महावीर ने ज्ञान के प्रसार के लिये आज से २६०० वर्ष पहले भी किया था, ध्यान की प्रक्रिया के द्वारा अपने मानसिक विकास को तीव्र गति प्रदान करना। ये सारी की सारी आवश्यकताएं भगवान् महावीर ने २६०० वर्ष पहले ही समझ ली थीं और उसके लिये व्यवहारिक ज्ञान ही नहीं बल्कि उसको अमली जामा पहिनाकर विश्व के सामने रखा। हर युग में क्रान्तिकारी आते हैं रास्ता दिखाते है, विरोध भी होता है। लेकिन ये क्रान्तिकारी कदम जब समय की कसौटी पर खरे उतरते हैं तो फिर एक होड़ उठती है उसको अपनाने की। २६०० वर्ष के अन्तराल में हमने इन क्रान्तिकारी कदमों का उदय मान प्रभाव होते भी देखा है और इनका विरोध भी। समय की कसौटी पर ये इतने खरे उतरे हैं कि ये राष्ट्रों के लिये ही नहीं उद्योग और व्यापार के लिये भी एक प्रभावी आचार संहिता का रूप ले चुके हैं। हमारी पीढ़ी का यह उत्तरदायित्व है कि वे आगे बढ़े और भगवान महावीर के इन सिद्धान्तों के पीछे छिपी हुई उस विचारधारा को और सृजनात्मक प्रवृत्तियों को खोज निकालने का प्रयास करे जिनके कारण ये सिद्धान्त आज सार्वभौमिक बन गये हैं। सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की कल्पना केवल कल्पना ही नहीं है, उद्योग, व्यापार और राष्ट्रों के प्रबन्धन के कुशल चितेरे केवल इसी लोक में यश अर्जित नहीं करते बल्कि आत्मा के चिरंतन सत्य को प्राप्त करने में भी उनके यही सिद्धान्त कारगर होते हैं। अपनी निष्ठा और ईमानदारी के साथ इन सिद्धान्तों के आधार पर उद्योग और व्यापार चलाने वाला व्यक्ति इसी मार्ग से आत्म कल्याण भी प्राप्त कर सकता है। यह महावीर का विश्व को ऐसा संदेश है जो अन्यत्र देखने को नहीं मिलता।

इसका सबसे बड़ा आकर्षण है कि सारी उपलब्धियाँ जीव स्वयं अपने परिश्रम से प्राप्त करता है और उसे किसी भी बाहरी शक्ति का आश्रय लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती। पंच परमेष्ठियों की वाणी का अनुसरण ही उसकी सफलता की कुंजी है।

अभी हाल में प्रेस के माध्यम से यह समाचार प्रकाश में आया कि कम्पनियां अपने मैंनेजरों को विभिन्न प्रकार की ध्यान की शैलियां सिखाकर उनके कार्यों में **क्वालिटी और क्वान्टिटी में** आशातीत बढ़ौत्तरी पाने में सफल हुई हैं। आज का अच्छा प्रबन्धन इस तथ्य को स्वीकार करता है कि दृढ़ इच्छा शक्ति, दूरदर्शिता, कार्य की गति जहाँ एक ओर अच्छे प्रबन्धन की आवश्यकताएं है वही दूसरी ओर इनको प्राप्त करने के लिये चित्त की एकाग्रता और उसके लिये ध्यान की प्रक्रिया नितान्त आवश्यक है। महर्षि महेश की योग साधना, श्री सत्यनारायण गोयनका की विपश्यना और भारत और विदेशों में चलने वाले हजारों ध्यान के केन्द्र इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिये कार्यरत हैं। यह आश्चर्य का विषय है कि जहाँ एक ओर ध्यान की प्रकिया जीव को चिरशान्ति प्रदान करती है वहीं दूसरी ओर भौतिक सुखों की प्राप्ति का भी एक सशक्त माध्यम है।

क्या हमने कभी यह विचार किया कि जीव को चिर शान्ति प्रदान करने वाले भगवान् महावीर के ये सिद्धान्त भौतिक सुखों के भी आधार हैं। इसके बीच में वह कौन सी स्थिति है जो पलभर में मानव को भौतिक सुखों से हटा कर मोंक्ष की चिर शान्ति प्रदान कर देती है। अपने उच्चतम वैभव पर अधिष्ठित चक्रवर्ती सम्राट भरत इन्ही सिद्धान्तों के अनुसरण से भौतिक ऐश्वर्य के चरम शिखर पर पहुँच चुके थे। पलभर में एक आभूषण शरीर से गिरा, सुन्दरता का मोंह पाश टूटा, कान्तिमयी त्वचा के नीचे की रुधिर अस्थि और माँस की कल्पना सामने आयी। क्षण भर में ही भौतिकता से विराग गहराता चला गया और उसी क्षण केवल ज्ञान प्राप्त हो गया। भारतीय इतिहास में ऐसे अनेको उदाहरण मौजूद हैं। मौंक्ष एवं भौतिक साधनों को प्राप्त करने के रास्ते एक ही हैं और जब ही जिस क्षण भौतिकता से विरक्ति होती है उसी क्षण मोंक्ष का द्वार खुल जाता है। भगवान महावीर की यह विश्व को अनूठी देन है।

कर्म की कहानी

पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी

अपना एक पुत्र, कुमित्र के संगत में गलत कार्य करता हो, पिता के आदेशानुसार न चलता हो तो पिता कहता है ***जवानी है, खाने घूमने की उम्र है, बड़ा होते ही सब समझ जायेगा। अगर पड़ौसी का लड़का हो तो कहता है सर्वनाश हो गया, अमुक के लड़के ने तो बाप-दादा का नाम ही डुबा दिया।***

चौदह वर्ष वनवास पूर्ण करके श्री रामचन्द्र लक्ष्मण और सीता के साथ अयोध्या में आकर सभी गुरुजनों को नमस्कार करते हैं। उस समय माता कैकेयी कहती है। राम! तुम तो महान हो, मुझे क्षमा कर दो। रामचन्द्र कहते है – माता ! यह क्या कह रही है। तुम तो जननी हो। माँ कभी भी पुत्र का अहित कार्य स्वप्न में भी नहीं सोच सकती है। अपने तो हमारे ऊपर करुणा की है। अगर हम वनवास नहीं जाते तो संसार में राक्षस राज्य छा जाता। धर्म के नाम पर मनुष्य अधर्म का ही पालन करने लग जाते। हम एक प्रजा प्रेमी राजा नहीं बन पाते। हे माता ! आपकी कृपा से ही तो ये सब संभव हुआ है। कैसी दृष्टि थी! कैसा प्रेम था। गुरु के साथ रहते चलते-चलते किसी औरत ने शिष्य के ऊपर छाई डाल दी। शिष्य को शांत करते हुए गुरु बोले – वत्स! यह तो अच्छा ही हुआ, उसने मात्र तुम्हारे ऊपर छाई डाली। अगर जलती अग्नि डाल देती तो और कष्ट भोगना पड़ता।

संत हो या संसारी, धनी हो या गरीब, रोगी हो या निरोगी, वे अगर स्वदोष दर्शन नहीं करते है तो पर दोष तो अवश्य ही देखते है। इसका परिणाम यह होता है कि परगुण दर्शन करने का स्वभाव ही नष्ट हो जाता है। ऐसे व्यक्ति सुखी परिवार, जीवन में शांति, चित्त की प्रसन्नता, निरोगी शरीर से दूर ही रहते हैं।

'सुख का योग जीवन को पापी और पागल बनाता है, दुःख का योग जीवन को शक्तिवान और परिपक्वता देता है।'

मित व मिष्ट भाषण— कौटुम्बिक जीवन में प्रेम, एकता, सम्पन्नता का स्थापन करने के लिए अधिक से अधिक हर सदस्य को मौन रखने की आवश्यकता होती है। आवश्यक कार्य के लिए बोलना भी हो तो बहुत ही कम शब्द का प्रयोग करना चाहिए। जो बोले वह भी मिष्ट भाषा में ही बोले। सुवर्ण बहुमूल्य है फिर भी किसी को तप्त सुवर्ण तो हाथ में नहीं दिया जाता है। इसी प्रकार सत्य बात भी आक्रोश पूर्वक नहीं बोलना चाहिए। व्यक्ति जब शांत बैठा हो तब स्नेहपूर्ण उनसे बाते करें। कोई व्यक्ति भूखा हो, या बाहर से आते ही उस पर रोष न करें। दोष भी एकान्त में स्नेह पूर्ण स्थिति को बनाकर बोले। ऐसे परिवार में संकट कभी नहीं आता। संसार स्वर्ग बन जाता है। मौन स्वयं ही एक बहुत बड़ी शक्ति है। मौन से व्यक्ति में एक अपूर्व शक्ति का संचार होता है। मौन में भी अनेक बाते कहीं जा सकती है, और सम्बन्धित व्यक्ति समझ भी जाते है। परिवार में ऐसा भी देखा गया है कि बहुत बोलने वाले को कोई सम्मान नहीं करते या उसकी बाते कोई सुनता ही नहीं है। ऐसे बोलने वाले को स्वयं भी कभी अनुभव होता है कि ***ऐसा न बोलते तो यह अनर्थ नहीं होता।***

अस्त्र-शस्त्र का घाव तो समय बीतने पर मिट जाता है, पर शब्द वाण का घाव मिटता तो नहीं बल्कि समय बीतने पर अधिक गहरा होता जाता है।

कभी बोलना हो तो अल्प और मिष्ट शब्द का ही प्रयोग करें।

मुख से मुख्यतया दो कार्य लिया जाता है। एक भोजन करना और दूसरा शब्दों का उच्चारण करना। इन दोनों कार्यों को जितना संयम से किया जाय उतना ही हितकारी और सुखकारी होता है। वैसे व्यक्ति नर देह में देव समान सम्मान पाते है। जन समाज में प्रिय बनते है। जिसको परिवार में स्वर्ग की स्थापना करना हो उस परिवार के सभी सदस्यों को मित और मिष्ट वचन बोलना चाहिए।

किसी को अनिच्छित बात कहनी हो तो, एकान्त में प्रथम उसके गुणों का और उपलब्धि का वर्णन करें। एक महानता की छवि उसके पास रखें- फिर कहे— तुम इतना छोड़ दो, या इतना कर लो तो बहुत ही अच्छा होगा। इससे जीवन लहराता बाग बन जायेगा।

भूमिका तैयार किये बिना सत्यबात भी दुःखद होती है।

बड़ो का सम्मान करें — परिवार में प्रेम और शांति के लिये बड़ों का बहुमान करना अनिवार्य है। सेवा भक्ति शरीर के माध्यम से किया जाता है। शरीर कमजोर होने पर सेवा-भक्ति करना संभव नहीं होता है। पर बहुमान मन की क्रिया है। बहुमान कोई भी और कभी भी किया जा सकता है। बड़ो का सबसे बड़ा बहुमान वही है कि उनकी आज्ञा का आदर करें और उनकी इच्छानुसार कार्य करें। उनका कभी भी अपमान न करें। वृद्धो की सबसे प्रिय वस्तु है ***'सम्मान'*** सम्मान के सामने वृद्धों का सब कुछ बेकार है। वृद्धो को अगर उचित सम्मान दिया जाय तो वे आपको हर संभव सहयोग करने के लिए हर समय तैयार होगें। कभी-कभी ऐसा होता है कि बुढ़ापा, कमजोरी, विस्मृति के कारण वृद्धो के अपने व्यवहार में बदलाव आ जाता है। उनके स्वभाव में क्रोध, कदाग्रह, आदि दुर्गुण आ जाता है। हम लाख प्रयत्न करने पर भी उनके स्वभाव के साथ तालमेल बैठा नहीं पाते है और उनकी अवस्था जन्य दोषों को बताकर अलग हो जाते है। हमें इस बात को हमेशा याद रखना चाहिए कि दोष किसमें नहीं होता है। उन वृद्धों के दोषों की उपेक्षा करके भी उनकी सेवा करना हमारा परमधर्म है। नीति सूत्र में कहा गया है कि अपने शरीर की चमड़ी से जूता बनाकर माता-पिता को पहनाने पर भी उनके ऋण से उऋण नहीं हो सकते है। जिस घर में अनुभवी वृद्ध नहीं होते है, वहाँ परिवार का वास्तविक विकास नहीं हो पाता है। किसी ने कहा भी है कि— जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि, और जहाँ न पहुँचे कवि वहाँ पहुँचे अनुभवी। अर्थात अपने साथ अनुभवी होतो बिगड़ते कार्य को भी सुधार देते है। वे वृद्ध व्यक्ति समय के अनुरूप कार्य करते हैं। संतान को स्वयं के माता-पिता को जीवित भगवती और भगवान मानना चाहिए। क्यों कि उन्हीं की असीम कृपा से संतान संसार में जीने लायक

बनता है। माता स्वयं न खाकर बच्चों को खिलाती है। ठण्डी, गरमी, वर्षा में रात-दिन देखे बिना टट्टी, पेशाब साफ करती है। उनकी अगणित करुणा से ही हमारे जीवन का निर्माण हुआ है।

परमात्मा का अनुग्रह,

माता-पिता गुरुजनों का आशीर्वाद! मूक जीवों की दुआ ही दुःखी जीवन को सुखी बनाती है।

हमें उक्त तीन बाते कभी भी नहीं भूलना चाहिए।

प्रातः इष्टदेव का स्मरण, पूजन, ध्यान, मंदिर में भगवान का दर्शन, माता-पिता गुरुजनों को प्रणाम।

गरीब दुःखी के प्रति करुणा भाव। जैन ग्रन्थ पंच सूत्र में लिखा है कि – एक मुमुक्ष का संसार त्याग तभी सफल हो सकता है, जब माता-पिता का अन्दर का आशीर्वाद मिलता हैं। माता-पिता को दुःखी करके दीक्षा लेने वाला वास्तविक साधु जीवन को उपलब्ध नहीं कर सकते है। भगवान महावीर भी मातृ स्नेह के कारण जबतक माता-पिता जीवित रहे, संसार त्याग नहीं किये। माता-पिता के स्वर्गवास होने के बाद ही तीस वर्ष की उम्र में भगवान महावीर गृहत्याग किये।

माता पिता का तिरस्कार महापाप का कारण है।

एक सफलतम जीवन का माता-पिता और गुरुजनों की आज्ञा ही महामंत्र है।

हम स्वयं किसी को बहुमान देगें तो अन्य व्यक्ति भी हमारा सम्मान करेगे। यह जगत का शाश्वत विनिमय सूत्र है। बीज जमीन में डालने के बाद ही फल देता है। यह जगत का नियम है। जिस परिवार में स्त्री सुलक्षण है, उस परिवार में कभी भी अशांति नहीं आती है। परिवार को सुसंस्कारित बनाने में स्त्री का सबसे बड़ा हाथ होता है। जिस घर की नारी दुश्चारिता होती है उस घर की शांति की कामना करना ही बेकार है।

पाप करते हुये अगर आपका मन स्वीकार न करें तो समझे की आप एक दिन महान बन सकते है।

नारी, नौकर, अतिथि का सम्मान करें – सुखी परिवार के लिए उपरोक्त नियमों का पालन करना अनिवार्य है। नीति सूत्र में लिखा है कि जिस देश में नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवों का वास होता है।

स्त्री का पर्यायवाची शब्द है गृहणी। इस शब्द से ही अनुमान लगाया जा सकता है, घर के साथ स्त्री का कितना सम्बन्ध है। गृहणी ही वास्तविक घर है। इनके ही बनने और बिगड़ने से घर बनता और बिगड़ता है। नारी को तो आभूषणों का आभूषण कहा गया है। इनकी शोभा ही घर, समाज और कुल की शोभा है। स्त्री चाहे तो परिवार को स्वर्ग या नर्क बना सकती है। नारी मात्र भोग का साधन नहीं हैं वह संसार रूपी मैदान में परिवार रूपी गाड़ी को चलाने के लिए दो पहिए में से एक पहिया है। स्त्री को प्रकृति कहा गया है। इसकी सुन्दरता में ही संसार रूपी बगिया सौन्दर्यमय और सुगन्धमय बनता है। स्त्री, पुरुष का विवाह मात्र काम पूर्ति के लिए नहीं होता है। यह एक पवित्रतम व्यवस्था है। यह विचार पद्धति समाज को कुव्यवस्था से बचाती है। एकं स्त्री को छोड़कर समाज की सभी महिलाओं को माता और बहन के रूप में प्रस्तुत करता है। नारी को लक्ष्मी का रूप देकर सर्वोत्तम सम्मान दिया गया है। आज के भौतिक वादी समाज में इस नियमों का वास्तविक रूप में पालन नहीं करने के कारण ही अनैतिकता, अनैतिक योन सम्बन्ध, विवाह विच्छेद, योन रोग बढ़ रहा है। अनैतिक रूप से जन्मी प्रजा जीवन की दिशा खोकर अन्याय के मार्ग पर चलने को विवश हो रही है। परिणाम स्वरूप ऊपर से नीचे तक सभी प्रजा भ्रष्ट बनती जा रही है। आज का समृद्ध समाज नारी को मात्र एक भोग्य सामग्री के रूप में देखता है स्त्री भी आज सामाजिक मर्यादा को तोड़कर बाजार में उतर गई है। शिक्षा के नाम पर आज की महिला की प्रवृत्ति भविष्य में समाज के लिए अभिशाप सिद्ध हो सकती है। स्त्री का मुख्य कार्य है परिवार को सुसंस्कृत बनाना। आनेवाली प्रतिभा को देश, धर्म, मानवता के लिए तैयार करना। आज की परिस्थिति इससे विपरीत हैं। नारी घर के बाहर आ जाने के कारण बच्चों का संस्कार का भार भाड़े की महिला पर हो गया है। बच्चे होश संभालने से पहले ही उन्हें ***चिल्ड्रेन होम*** में भेज दिया जाता है। फलस्वरूप बच्चों के अन्दर माता-पिता के प्रति समर्पण भाव ही समाप्त हो

जाता हैं। बड़े होने पर माता-पिता को छोड़कर स्वतंत्र जीवन जोने के लिये मजबूर हो जाता है। आज की परिस्थिति में नारी को भी सार्वजनिक स्थान में आने के लिये बाध्य किया गया है। शादी होने के बाद ससुराल में अनेक कष्ट, माता-पिता पर दहेज का बोझ, सासू का परायापन का व्यवहार इसका मुख्य कारण है। संतान रहते हुए विवाह विच्छेद तो अत्यन्त निन्दनीय कृत्य है। इस प्रकार के विवाह विच्छेद से पति-पत्नी का जो होना, वह तो होता ही है पर उनकी संतान की स्थिति अत्यन्त दयनीय होतो है। आज की नारी की हत्या या आत्महत्या में ९० प्रतिशत अनैतिक सम्बन्ध कारण होता है।

नौकर का सम्मान भी परिवार के एक सदस्य के रूप में ही होना चाहिये। नौकर को मात्र एक दास या दासी के रूप में नहीं देखना चाहिये। वह नौकर एक गरीब आदमी हो सकता है, पर उसमें भी स्नेह, संवेदन, सुख-दुःख की अनुभूति है। नौकर को अधिक तुच्छ समझने से उनके मन में धीरे-धीरे हीन भावना पनपने लगती है। और एक दिन अपने मालिक के घर में ही चोरी, हत्या आदि करने के लिये तैयार हो जाता है। वही नौकर आगे चलकर प्रतिशोध की भावना से असमाजिक तत्व की गली पहुंच जाता है। हमारी असद् भावना कभी-कभी नौकर को क्रूर बनने में मजबूर करती है। नौकर को भी उचित मान-सम्मान देवे। पर्व, त्योहार पर नौकर की पारिवारिक समस्या में सहयोग करें, आधार बनें। संकट के समय में उन्हें सहयोग करने से विपत्ति में भी मालिक को छोड़कर नौकर कभी नहीं जाता है।

तीसरे स्थान में हमारा अतिथि है। भारतीय संस्कृति में अतिथि को देव कहा गया है। आये हुये अतिथि का उचित सेवा-सत्कार अवश्य करना चाहिए।

सन्तान वात्सल्य — संतान का जीवन विकास धिक्कार से नहीं वात्सल्य से होता है। धिक्कार या अतिस्नेह संतान को कुमार्ग में ले जाता है। प्रारंभ से ही घर में ऐसा वातावरण हो कि संतान को गलत रास्ते पर जाने का मन ही न करें। बच्चा अगर बाल सुलभ स्वभाव से या मित्रों के कहने में आकर गलत कार्य करें तो स्नेह पूर्ण स्थिति में उसको समझाने का प्रयास करना चाहिए। कभी-कभी उनकी भावना को भी महत्व देना चाहिए। उसको

कभी भी ऐसा कठोर दण्ड न दे कि आपके प्रति दुर्भावना बने। संभव हो तो उस बच्चे को ऐसे वातावरण में रखें कि उसको-कभी कठोर दण्ड की स्थिति में पहुँचना ही न पड़े।

कुछ माता पिता अपने बच्चों को संस्कारी बनाने के नाम पर अनावश्यक अनुशासन में रखते है, परिणाम स्वरूप बच्चे झूठी माया, विश्वासघात का रास्ता अपनाते हैं।

कुछ व्यक्ति स्वयं के मुक्ताचार के लिये संतान को अधिक विलासी बना देते है।

कभी-कभी बच्चों को धर्म के नाम पर गलत मार्गदर्शन दिया जाता है। उनकी अपनी धारणा के अनुरूप धर्म आराधना-उपासना का अवसर न मिलने के कारण धर्म के प्रति श्रद्धा ही नष्ट हो जाती है। जैसे बच्चे की इच्छा है गरीबों को भोजन कराने की, आपने उससे उसकी धारणा के विपरीत मंदिर में दान देने के लिये बाध्य किया अब वह बच्चा अपनी इच्छानुसार गरीब को भोजन न करा सका और न ही भाव से मंदिर में दान दे सका। हाँ अगर आपको अपनी इच्छानुसार धर्म कार्य बच्चो से कराना हो तो उनके मानसिक विचारों में बदलाव लाने का प्रयास करे। नहीं तो आगे उसकी भावना का स्रोत ही बन्द हो जायेगा। महात्मा गाँधी के पौत्र हरिदास परिवार में अनुकूल स्थिति न मिलने के कारण मुस्लिम धर्म स्वीकारने के लिए बाध्य हो गये थे।

माता-पिता तथा बड़ो के वात्सल्य के अभाव या धिक्कार के कारण ही संतान गलत व्यक्ति की संगत में चला जाता है।

बच्चों में अति स्नेह और तिरस्कार दोनों ही गलत असर करते हैं। उन्हें चाहिए अपार वात्सल्य धारा।

माता का प्रत्येक आचरण, व्यवहार, विचार का प्रभाव बच्चे पर पड़ता है। गर्भस्थ बच्चे पर भी माता के विचारों का प्रभाव पड़ता है। गर्भावस्था में माता जैसा कार्य, विचार करती है उसका प्रभाव गर्भस्थ बच्चे पर पड़ता है। सुसंस्कारित बच्चे जन्म देने के लिये माता को गर्भकाल में धर्ममय जीवन, सदाचार पालन, उदारता गंभीरता, सरलता, प्रसन्नता, स्नेह आदि में डूबा रहना चाहिए।

अत्यन्त कामासक्त दम्पति की संतान कुरूप और दुराचारी होती है। माता-पिता अपना दुराचार और दुर्व्यसन के कारण अपनी संतान को परम्परागत असाध्यरोग देते है। जैसे- सुगर, दमा, आँखों की बीमारी, रक्तचाप आदि।

माता-पिता को इतना ध्यान रखना चाहिये कि वे संतान को धन सम्पत्ति दे सके तो ठीक, न भी दे तो वे अपनी मेहनत से कमा लेगें। पर उन्हें असाध्यरोग खून में न दें।

कर्ज और रोगों का पुलिन्दा देने वाले माता-पिता संतानों के सुख और समृद्धि के हत्यारे है। ऐसे माता-पिता को शास्त्र में शत्रु के समकक्ष कहा गया है।

गर्भकाल का नवमास और प्रारंभ बाल्यावस्था का आठ वर्ष बच्चो के लिये महत्वपूर्ण होता है। इन्ही दिनों का संस्कार आजीवन रहता है। २० वर्ष के उम्र तक बच्चो को माता-पिता की स्नेही छत्रछाया में रहना चाहिए। २० वर्ष की उम्र तक अगर संतान को सही शिक्षा दी जाय तो फिर बाद में वह कहीं भी क्यों न हो अपने बाल सुलभ संस्कार के विरुद्ध कार्य नहीं कर सकता हैं।

आज की पाश्चात्य संस्कृति के अनुकरण के कारण संतान को उच्च मानवीय संस्कार देना असंभव प्रायः हो गया है।

माता अपनी सुन्दरता के रक्षण के नाम पर बच्चे को स्तनपान नहीं कराती है या बहुत ही कम कराती है। फलस्वरूप उन माता को दो हानियाँ होती है। एक संतान के स्नेह से वंचित रहती है और दूसरा स्तन कैन्सर होने की संभावना अधिक बन जाती है। माता बच्चे को स्नेह नहीं बल्कि स्नेह के नाम पर अपनी सुविधानुसार कुखाद्य या कुसंस्कार की ओर प्रेरणा देती है।

आज की माता संतान के गर्भ में आते ही क्रूरता पूर्वक संतानों की हत्या करके घर-घर में कत्लखाना बना रही है। आज सरकार भी इस पाप कार्य को करने के लिए, डाक्टरों को अनुमति दे रही है। मानव सेवा के नाम पर डाक्टर आज मानवता की हत्या में अपनी शक्ति लगा रहे है।

आज नारी ही नारी की हत्या कर रही है। अगर कोई अभागिनी नारी रूप में माता के गर्भ में आती है तो अन्य नारी उसको इस संसार में न आने देना ही शायद उचित समझती होगी। शायद नारी का नारी के प्रति ईर्ष्या का यह ज्वलन्त उदाहरण है।

माता को हमेशा वात्सल्य की मूर्ति बननी चाहिए। हमारी माता चाहे तो अपने उच्च विचारों का प्रचार-प्रसार करके संसार को स्वर्ग बना सकती है।

एक अनुभवी ने लिखा है कि—

जननी तुं जन्म दे, कोई दाता या सूरवीर।

नहीं तो रहना बन्ध्या, नष्ट न कर मातृत्व का नूर।।

पिता भी ऐसे बने की पुत्र सहजभाव से पिता का अनुसरण करें। हर क्षेत्र में पिता का गौरव बढ़ावे। जीवन विकास और समृद्धि में पिता का सम्पूर्ण हाथ होता है। संतान अगर उन्मार्ग में जाय, मर्यादा का पालन न करें, स्वच्छन्दी बने तो माता-पिता के हृदय में दुःख होना चाहिए। सामान्य प्रयास से बच्चे को अगर अन्याय के दल-दल से बचा न सके तो उसे निमित्त त्याग, व्रत करना चाहिए। एक दिन वे बच्चे भावना से प्रभावित होकर अवश्य पिता का कहना मानेंगे।

एक व्यक्ति के जीवन में ४० प्रतिशत पूर्व जन्म का संस्कार, ४० प्रतिशत माता-पिता का संस्कार, २० प्रतिशत वर्तमान का प्रभाव जीवन में पड़ता है। माता-पिता द्वारा अयोग्य शिक्षा, उपेक्षा आदि मुख्य कारणभूत हैं। माता-पिता का संस्कार जीवन के प्रथम भाग में मिलने के कारण उसी का महत्व अधिक रहता है। अगर बचपन में सही संस्कार मिले तो अन्य ६० प्रतिशत संस्कार गौण हो जाता है।

प्रत्येक व्यक्ति महानता का गुण लेकर ही जन्म लेता है, पर इस संसार का संस्कार महानता को प्रगट होने नहीं देता है।

मित्तव्ययता — आज का मानव समाज अनुकरण प्रिय बन गया है। धनी हो या गरीब सामर्थ हो या न हो आज हम अनुकरण देखा-देखी के

आधार पर ही जीवन निर्वाह कर रहे हैं। बाजार में कुछ भी नयी वस्तु देखते ही हम युवक-युवती उस वस्तु को प्राप्त करने के लिए प्रतिस्पर्धा में खड़े हो जाते है। चाहे वे वस्तु हमारे पास पड़ी हो या व्यर्थ हो–वह खाने का पदार्थ हो या पहनने का या घर में शोरूम में रखने का। फैशन बदलते ही नई वस्तु हमारे घर पर आ जाती है, पुरानी बेकार हो जाती है।

अन्य को देखकर देखा-देखी अनुकरण वृत्ति से व्यक्ति अमाप खर्च करते है। आय से व्यय की मात्रा अधिक हो जाती है। फिर व्यक्ति आय पूर्ति के लिये अनैतिक रास्ते में चल पड़ता है। पैसे के कारण लूटपाट, चोरी, बेईमानी, करचोरी की ओर बढ़ता है। भोग की पराकाष्ठा पर पहुँच कर इन्सान स्वयं को एक चलता-फिरता मृत मानव बना देता है। आज समाज का एक वर्ग व्यसन और फैशन में करोड़ो रूपया नष्ट कर रहा है तो दूसरी ओर देश की ४० करोड़ प्रजा एक समय सात्विक भोजन भी भरपेट नहीं जुटा पा रही है।

कहने के लिए तो हमारा देश ५० वर्ष पूर्व स्वतन्त्र हुआ है, पर वास्तविकता यह है कि कुछ धनी व्यक्ति और सत्ताधारी की मुट्ठी में हमारा देश कैद हो चुका है। इन्ही कुछ व्यक्तियों के इशारे पर सम्पूर्ण देश का अर्थ तन्त्र संचालित होता है।

इस देश में ऐसी भी प्रजा है जिसके बच्चे एक-एक टुकड़े के लिए तरसते है। गट्ठरों से रोटी का टुकड़ा उठाकर अपना पेट भर रहे है। देश का २० लाख व्यक्ति फेंक दिया गया अन्न खाते है। भूख और कुपोषण के कारण रोज हजारों ३ वर्ष के कम उम्र के बच्चे मर रहे है ४० से ५० हजार वयस्क स्त्री-पुरुष इसी कारण से मौत के मुंह में जा रहे है।

इस देश में विदेशी अंग्रेज ने राज्य करके जितनी प्रजा को नंगा नहीं नचाया, उससे कहीं अधिक आज का देशी अंग्रेज (शिक्षित भारतीय नेता) भारतीय प्रजा को नंगा नचा रहा है।

गरीबों के खून पर नाचना मानवता का क्रूर उपहास और जघन्य हत्या है।

मात्र मोक्ष या स्वर्ग के लिए नहीं परन्तु विश्व की गरीबी दूर करने के लिए मानवता की रक्षा के लिए हमें अपव्यय से बचना चाहिए। व्यसन और

फैशन से मुक्त रहना चाहिए। हमारा व्यसन और फैशन गरीबी का क्रूर उपहास है। जीवन की आवश्यकता पूर्ति होने के बाद हमारे पास जो भी सम्पत्ति बचे वे सभी सम्पत्ति मानव कल्याण में खर्च करने का प्रयत्न करना चाहिए।

जीवन का सबसे बड़ा धन सदाचार है। धन तो चोर लूट सकता है, खाने खत्म भी हो सकते है। पर सदाचार रूपी धन न कभी चोर ले सकता है और न खर्च करने पर खत्म ही होता है। बल्कि दिन-प्रतिदिन इसमें निखार आता है। सदाचार से जीवन में परम आनन्द की अनुभूति होती है।

आज कुमारी कन्या या विवाहित स्त्री अपनी कामुकता को प्रदर्शन करने के लिए फैशन, उद्‌भट वेश, कृत्रिम मेकअप द्वारा पुरुषों को आकर्षण करने का प्रयत्न करती है। सिनेमा, ब्लु किताब, ब्लु फिल्म द्वारा आज के युवा वर्ग को भ्रष्ट बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। इस प्रकार अनेक कारणों से आज का शिक्षित और धनी वर्ग का बहुत बड़ा भाग अनीति के मार्ग पर आगे बढ़ रहा है। आर्य की महान संस्कृति को इन यथाकथित समाज के अधिनायकों के द्वारा योजना बद्ध नष्ट किया जा रहा है। हमारी प्राचीनतम संस्कृति नष्ट हो रही है।

हमारे जैसे ही एक मानव की रक्षा के लिए अनावश्यक व्यसन और फैशन का त्याग करना महान धर्म है।

संभव हो तो जीवन में कम से कम एक व्यक्ति का निःस्वार्थभाव से जीवन उन्नत बनाने का व्रत लेना चाहिए।

जीवन में मात्र धार्मिकता और धर्म क्रिया के लिए ही नहीं मानवता और राष्ट्रीयता के लिए भी कुछ करना चाहिए। मानवता और राष्ट्रीयता का त्याग करके मात्र धार्मिक क्रिया में डूबे रहना समाज के मूल जड़ के लिए हानिकारक है। इससे समाज का बुनियादी स्तम्भ ही नष्ट हो जायेगा।

धर्म करने वाला प्रेम, शांति, आरोग्यता प्राप्त करता है। संतान, परिवार की ओर से अपार स्नेह मिलता है। अन्तिम जीवन आनन्द और संतोषमय बनाकर मृत्यु को महोत्सव बनाया जा सकता है।

सदाचारी बने — सदाचार मानव जीवन का सुगन्ध है। मानव जीवन की सबसे बड़ी सुन्दरता ब्रह्मचर्य का पालन है। ब्रह्मचारी में उत्साह,

आनन्द और जागरुकता होती है। ब्रह्मचर्य में अपूर्व चित्त की प्रसन्नता प्राप्त होती है। वीर्य का रक्षण शरीर का आकर्षण बढ़ाता है। जो व्यक्ति विजातीय अथवा सजातीय वासना के द्वारा बारम्बार वीर्य का क्षय करता है, वे निरुत्साही और शक्तिहीन हो जाता है। वे व्यक्ति धर्म, संस्कृति और देश की रक्षा करने में अक्षम होते है।

वीर्य (धातु) अस्ति और मज्जा को पुष्ट करता है। स्वपत्नी या स्वपति के अतिरिक्त वासना को कभी भी जगाना नहीं चाहिए। काम वासना भी एक व्यसन (आदत) है। एक बार व्यक्ति अगर अनैतिक रूप से वीर्य का क्षय करना प्रारंभ कर देता है तो फिर वह रास्ता छोड़ना उसके लिए असंभव हो जाता है। इस कारण से व्यक्ति को समाज में कभी दण्डित या अपमानित भी होना पड़ता है। परिवार विच्छेद का कारण भी बनता है। इसीलिए मनीषियों ने विवाह विधान रखे है। विवाह द्वारा एक स्त्री और पुरुष का पवित्र मिलन का विधान है। वैदिक विधान में दोनों को मिलाकर एक अंग बनाया गया है। इसीलिये स्त्री को अर्धांगिनी कहते है। वैवाहिक स्त्री पुरुष के मिलन का उद्देश्य भी संस्कारित संतान उत्पत्ति के लिये ही कहा गया है। वैदिक शास्त्र में कहा है कि स्वस्थ व्यक्ति को महिने में एक बार स्त्री सम्बन्ध करना चाहिये। पर आज की परिस्थिति इससे एकदम विपरीत है। आज व्यक्ति तरह-तरह की कामुकता की दवा लेकर और अधिक अनीति के रास्ते पर चलने का प्रयत्न कर रहा है। समाज को और अधिक कामुक बनाने के लिये सरकार भी टेलिविजन सिनेमा के माध्यम से प्रजा को प्रोत्साहित कर रही है।

पुरुष से भी स्त्री को ब्रह्मचर्य का पालन चुस्तरूप में करना चाहिए। क्योंकि स्त्री के अनैतिक सम्बन्ध से वर्णशंकर प्रजा की संभावना बढ़ जाती है।

वीर्यवान व्यक्ति साहस और उत्साह पूर्वक इच्छित कार्य को कर सकते है।

वीर्यवान की वाणी में अपूर्व शक्ति होती है। स्वामी विवेकानन्दजी अपनी वाणी की शक्ति पर एक दिन सारे संसार को झुका दिये थे। पूर्ण ब्रह्मचर्य पालन करने वाले महात्मा सिद्ध पुरुष कहलाते है। इस प्रकार के सिद्ध पुरुष में ऐसी शक्ति आ जाती है कि वे भविष्य में घटने वाली घटना को समय से पूर्व ही जान लेते है। ब्रह्मचारी सद्गृहस्थ की सन्तान शूरवीर सज्जन और संत बनती है।

प्राचीन काल में मानव समाज में ब्रह्मचर्य का विशेष महत्वपूर्ण स्थान था। इन्हीं ब्रह्मचारी महापुरुषों के पुण्यबलपर देश समृद्ध था।

ब्रह्मचारी बनने का कुछ सरल उपाय–

परिश्रम — बेकार, व्यर्थ बैठकर समय न बिताये, सब समय कुछ न कुछ कार्य करते रहें। श्रम से शक्ति का विकेन्द्रीयकरण होता है।

दुष्ट संग त्याग — असत् मित्र, साहित्य का त्याग करना, बेकार अकेला एकान्त में न बैठना।

प्रसन्न रहना — हमेशा आनन्दित रहे, मुस्कराहट जीवन शांति देता है।

अपना कार्य स्वयं करें — अपना कार्य स्वयं अपने हाथ से करें। समय पर भोजन करें और सो जावे। सोने से कम से कम ३ घन्टा पूर्व भोजन करें। प्रकृति के विरुद्ध भोजन न करें। सामर्थ्यानुसार लेखन, पठन-पाठन, मावन सेवा, समाज सेवा, देवपूजा, अतिथिसेवा, प्राणी सेवा, में अपना अमूल्य समय का सदुपयोग करें।

निरोगी शरीर, स्वस्थमन, और प्रसन्न जीवन बनाये रखें। जीवन का थोड़ा समय निकाल कर परोपकार का कार्य तो अवश्य करें। सदाचार यह देश की अमूल्य सम्पत्ति है। अगर हमें समाज का उत्थान करना है, मानवता को बचाये रखना हो तो सदाचारी प्रजा तैयार करनी होगी। सदाचारी प्रजा ही देश, धर्म समाज, जाति की सुद्ढ़ प्रहरी बन सकती है।

मर्यादा पालन — आर्यावर्त देश की संस्कृति महान है। यह सम्पूर्ण विश्व में भारतीय (पूर्वीय) संस्कृति का चाहक और अनुमोदक रहा है। हमारी भारतीय संस्कृति में नर से नारायण बनने तक की अपूर्व आध्यात्मिक प्रक्रिया है। आर्य संस्कृति में मानव को महामानव बनने के लिए चार पुरुषार्थ की भूमिका बताई है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

(क) धर्म — हर व्यक्ति का अपना एक धर्म है। उस धर्म को निष्ठा पूर्वक पालन करना चाहिए। जैसे–मातृ धर्म, पुत्र धर्म, पड़ोसी धर्म, कुल धर्म, देवधर्म, अध्यात्म धर्म आदि। धर्म अर्थात मर्यादा का चुस्तता से पालन

करना। यदि हम परस्पर अपनी मर्यादा का पालन करते रहे तो स्वयंमेव संसार में स्वर्ग उतर आयेगा। क्लेश, संघर्ष का कोई कारण ही नहीं बचेगा।

(ख) अर्थ — व्यक्ति अपनी आवश्यकतानुसार धन का उपार्जन करे। अन्य पर निर्भर न रहें, और कोई आवश्यकता से अधिक संग्रह भी न करें। क्यों कि व्यक्ति जितना अधिक धन संग्रह करता है, उतना ही अधिक आवश्यकताएँ बढ़ जाती है। अनावश्यक धन उपार्जन करने के लिए देश के विरुद्ध आचरण न करें।

(ग) काम — काम का सेवन भी अपना सामाजिक धर्म समझ कर ही करें। अमर्यादित काम सेवन धर्म के विरुद्ध है।

क्रमशः

मलयासुन्दरी चरित्र

स्वजन-मिलाप

बहुत देर तक इसी प्रकार युद्ध चलता रहने से अब सामने वाली सेना का संगठन टूट गया। बड़े-बड़े योद्धाओं का हौशला परास्त हो गया। इतनी विपुल सेना छिन्न-भिन्न होती देख दोनों राजाओं के होश गुम होने लगे। जिस तरह तेजस्वी गुरु और शुक्र को चंद्रमा निस्तेज कर डालता है उसी तरह अकेले महाबल ने अपनी दिव्य सहायवाली बाणवृष्टि से दोनों राजाओं को निस्तेज कर दिया। महाबल के शस्त्राघात से उनके हाथ से छूटकर शस्त्र जमीन पर गिरने लगे। और वे लज्जा से अधोमुख हो चिन्तातुर होकर सोचने लगे–अहो! कैसा आश्चर्य ये? मुट्ठी भर सैनिकों को साथ लेकर सिद्धराज अकेला ही कैसा पराक्रम बतला रहा है? धन्य है ऐसे वीर योद्धा को। हे प्रभो! आज इस दुर्दमनीय महायोद्धा सिद्ध–राजके सामने किस तरह हमारी लज्जा रहेगी?

अपने पिता और स्वसुर को युद्धक्षेत्र में पराजित होने के कारण चिन्तित देखकर महाबल ने व्यन्तर देवको कुछ सूचनाकर पहले से लिखा हुआ पत्र बाण के अग्रभाग में रखकर वह बाण अपने पिता राजा सूरपाल के सामने फेंका। दिव्य–प्रभाववाला सिद्धराज का छोड़ा हुआ बाण राजा सूरपाल को तीन बार प्रदक्षिणा पूर्वक नमस्कार कर, तमाम मनुष्यों को आश्चर्य चकित करता हुआ राजा के सामने आ पड़ा। दोनों राजा आश्चर्य पाते हुए उस बाण के पास आये और उसके अग्रभागपर चिपकाये हुए पत्र को महाराज शूरपाल ने उठा लिया। पत्र को देख तमाम सैनिकों को बड़ा आश्चर्य हुआ। मंत्री बगैरह सेना के तमाम प्रधान पुरुष उस पत्र को सुनने के लिए उत्सुकता पूर्वक महाराज शूरपाल के पास आ खड़े हुए। महाराज शूरपाल ने भी उस पत्र को खोलकर सबके समक्ष उच्च स्वर में पढ़ना शुरू किया।

श्रीमान्, वीर शिरोमणी, रणांगण भूमि में स्थित पूज्य पिता श्री महाराज शूरपाल नरेन्द्र के चरणारविंदों में तथा श्रीमान् चंद्रावती नरेश, महाराज

वीरधबल के चरण कमलों में, आपश्री के सम्मुख समरभूमि में स्थित महाबल कुमार आप सबको नमस्कार पूर्वक प्रार्थना करता है, कि आपकी पवित्र कृपा से मुझे इस राज्य का पूर्ण परिग्रह प्राप्त हुआ है। पूज्य पिताश्री के प्रमोदार्थ आपके समक्ष जो मैने अपनी भुजाबल का विनोद किया है, और उससे आप पूज्यों का जो पराभव, अवज्ञा, या अविनय हुआ हो तो आप कृपाकटाक्ष द्वारा उसे क्षमा करें। पूज्य पिताश्री के दर्शनार्थ के लिये मैं स्वयं प्रबल उत्कंठित हो रहा था, इतने ही में पुण्योदय से अकस्मात् पूज्यों का पवित्र दर्शन प्राप्त हुआ है, इसलिये इस अद्वितीय हर्ष के स्थान में आप श्री शोक सागर में क्यों निमग्न हो रहे हैं?

पत्र पढ़ते ही सारी सेना में हर्षध्वनि होने लगी। राजा सूरपाल और वीरधवल के जिस हृदय में कुछ ही देर पहले चिन्ता और शोकने स्थान प्राप्त किया हुआ था वही हृदय अब हर्ष और प्रमोद से पुलकित हो उठा। राजा सूरपाल आनन्द के आवेश में बोल उठा–अहो! भाग्योदय। जिस प्रियपुत्र के दर्शनार्थ लगभग डेढ़वर्ष से तरस रहा हूँ आज वह राज्य ऋद्धि संपन्न अपनी प्रिया सहित मिलेगा!!. नरक के समान वियोग दुःख से आज हमारा उद्धार होगा। आज हमारे पिपासित नेत्र पुत्रदर्शन से तृप्त होंगे। इस प्रकार बोलता हुआ सूरपाल राजा महाराजा वीरधबल के साथ उत्सुकता पूर्वक महाबल के सम्मुख चल पड़ा।

प्रेम एक ऐसी भावना है कि उसके सामने मान, अपमान, बड़े छोटे की गणना या तुलना नहीं रहती। अविवेक या अविनय तो उसके अखण्ड रस के प्रवाह में विलीन हो जाता है। प्रत्युत आन्तरिक लगन को प्रकट कर स्वत्व का पोषण करता है।

महाबल अपने पिता तथा स्वसुर को अपने सम्मुख आता देख रणरंग हाथी से नीचे कूदकर पिता के सामने दौड़ पड़ा। शीघ्र ही पास जाकर पिता के चरणों में मस्तक झुका दिया, और आनन्द के आँसुओं से उसने दबी हुई चिरकालीन वियोग व्यथा को दूर किया। अब समरभूमि में न रहकर महाबल ने अपने पूज्य जनों को बड़े समारोह के साथ नगर में प्रवेश कराया।

राजमहल में पहुँचते ही मलयासुन्दरी ने अपने पिता तथा स्वसुर के चरणों में आकर नमस्कार किया। उन्हें देखते ही उसे अनुभूत दुःख याद आ

गया। दुःख याद आने पर उसका हृदय उसके आधीन न रहा। उसके नेत्रों से अखण्ड अश्रु-प्रवाह बहने लगा, और वह फूट-फूट कर रोने लगी। वह आप ही नहीं रोई बल्कि अपने स्वजनों को भी उसने खूब रुलाया। अन्त में धैर्यधारण कर उसके पिता और स्वसुर ने उसे दिलासा दिया। पूछने पर मलयासुन्दरी और महाबल ने अपने पिता और स्वसुर को अपना अनुभव किया हुआ आज तक का समस्त वृत्तान्त कह सुनाया। मलयासुन्दरी के दुःख का वृत्तान्त सुनकर दोनों राजाओं के नेत्रों से अश्रु टपकने लगे। राजा सूरपाल के हृदय में अपनी की हुई भूल के पश्चात्ताप का पार न रहा। मलयासुन्दरी के सामने उनकी गरदन नीची हो गई। पश्चात्ताप के दुःख से उनका हृदय गद्गद हो गया। वे विनम्र भाव से बोल उठे बेटी कुल-वधु! तुम तत्त्वज्ञा हो इस अविचारी सूरपाल को जो तुम्हारे सर्व दुःखों का कारण बना है, क्षमा करो। देवी! मैं तुम्हारे सामने मूर्ख और अपराधी हूँ।

राजा वीरधबल पुत्री के मस्तक पर हाथ फेर कर बोला-बेटी! तुमने बड़ा घोर दुःख सहा! राजकुल में पैदा होकर भी तुम निष्पुन्यक भिखारी के समान रुलती फिरी! चंद्र किरणों के समान निर्दोष और गुलाब कुसुम के समान कोमलांगी पुत्री! तूने किस तरह ऐसे घोर दुःख सहे होंगे! इस प्रकार दुःखित हृदय से सबने मलयासुन्दरी के दुःख से शोक संवेदना प्रगट की।

स्नान भोज कर फिर राज्य-प्राप्ति के सम्बन्ध में बात चीत शुरु हुई। सूरपाल बोला-बेटा तुम्हारी सहन-शक्ति अगाध है। तुमने कंदर्प पर बड़ा भारी अनुग्रह किया। परन्तु फिर भी वह दुष्ट तुम्हारे अनुग्रह से कुछ लाभ न उठा सका। बेटा! तुम्हारा साहस, तुम्हारी तीक्ष्ण बुद्धि, तुम्हारा धैर्य और तुम पर प्रजा का जो असीम प्रेम है वह सब प्रशंसा के योग्य है। इत्यादि पुत्र के गुणों की अनुमोदना करते हुए राजा सूरपाल ने पूछा-बेटा! जंगल में पैदा हुआ मलयासुन्दरी का वह पुत्र कहाँ? पापी दुष्ट बलसार ने उसकी क्या व्यवस्था की है?

महाबल-बलसार को यहाँ बुलाकर पूछने से मालुम होगा। बलसार को शीघ्र ही जेलखाने में से राजा सूरपाल के पास बुलाया गया। वह राज पुरुषों के पहरे में और हथकड़ी बेड़ियों से जकड़ा हुआ राजसभा में हाजिर

हुआ। उसको देखते ही राजा सूरपाल त्यौरी चढ़ाकर बोला–अरे दुष्ट! तूने हमारा भयंकर अपराध किया है। इस अपराध में तुझे भारी से भारी शिक्षा मिलनी चाहिये। तू प्रथम यह तो बतला कि तूने उस हमारे प्राण-प्यारे पोते की क्या व्यवस्था की है? और उसे कहाँ रक्खा है?

सूरपाल और वीरधवल राजा को वहाँ बैठा देख कर बलसार के छक्के छूट गये। वह और भी घबड़ा गया और मन में सोचने लगा कि जिनकी सहायता से सिद्धराज के जेलखाने से छूटना चाहता था, उन्हीं के यह पुत्र पुत्री हैं। जिस बीरधबल राजा की सहायता से मैं छुटकारे की कुछ आशा रखता था उन्हीं की पुत्री मलयासुन्दरी को मैंने घोर दुःख में डाला है, इतना ही नहीं किन्तु उसे द्रव्य लेकर कारु लोगों के हाथ में पशु के समान बेच दिया था। इत्यादि बातें याद आते ही उसके होश गुम हो गये।

वह सोचने लगा कि मेरे सब मनोरथ निष्फल हो गये। राज-द्रोह और स्वामी का अपराध करनेवाले मुझको सहकुटुम्ब प्राण–दण्ड की शिक्षा के सिवा अब अन्य –मार्ग ही नहीं दीखता। अर्थात् मरने से बचने का अब कोई उपाय नहीं है। इस प्रकार सोच विचार कर बलसार बोला महाराज! मैंने आपका बड़ा भयंकर अपराध किया है, इससे मैं अवश्य ही शिक्षा का पात्र हूँ, तथापि यदि आप मुझे कुटुम्ब सहित प्राण दान देवें तो मैं आपके उस पुत्र को बतला सकता हूँ, अन्यथा मुझे यों भी मरना है, और वैसे भी।

सूरपाल राजा–खैर, यदि तू हमारे जीवित-पुत्र को लादे तो हम तुझे तेरी इच्छानुसार जीवन दान देते है। यों कहकर राजा ने बलसार के बतलाये हुए गुप्त स्थांन पर राज-पुरुषों को भेजा, और वहां पर हिफाजत से रहे हुए उस बालक को राज्य सभा में ले आये। जिस तरह वर्षा-ऋतु में मेघागमन से आनन्दित हो मयूर-कुटुम्ब नृत्य करता है; वैसे ही पुत्र को देखकर सारा राजकुटुम्ब हर्षित हो उठा।

सूरपाल राजा ने बलसार से पूछा–इस कुमार का तुमने क्या नाम रक्खा है?

बलसार ने कहा–महाराज! इसका नाम बल रक्खा है। राजा ने पोते को अपनी गोद में ले लिया, उस समय उसके हाथ में सौ सुवर्ण मुहरे थीं। उन

स्वर्ण मोहरों की थैली को बालक ने अपने हाथ से पकड़कर खींच लिया, यह देखकर राजा ने उसका नाम शतबल रख दिया। सूरपाल राजा ने बलसार सार्थवाह का सर्वस्व लूटकर उसे सकुटुम्ब जीवन दान देकर देश से बाहर निकाल दिया।

एक वर्ष के बाद मलया सुन्दरी का मिलाप होगा यह उस ज्योतिषी का वचन सत्य हुआ। बराबर एक वर्ष पूरा होते ही महाबल को मलयासुन्दरी का प्रथम समागम उस कुएँ में हुआ था।

स्वजन सम्बन्धियों का मिलाप होने के कारण राजकुटुम्ब और सारे राज्य भर में आनन्दोत्सव मनाया गया बहुत समय से पुत्र और पुत्री के विरह से संतप्त दोनों राजा आज शांति का अनुभव कर रहे थे। सिद्धराज राजा सूरपाल के महाबल कुमार नामक पुत्र हैं, यह जानकर प्रजा में और भी आनन्द छा गया। अपने भुजबल से पैदा किये हुए राज्य को महाबल कुमार ने अपने पिता को समर्पण किया। परस्पर परमस्नेह में निमग्न होकर दोनों राजकुटम्ब सानन्द समय व्यतीत करने लगे।

चन्द्रयशा–केवली

अनेक प्रकार के पार्थिव वैभवों का अनुभव करता हुआ महाबल का राजकुटुम्ब इष्ट संयोग के सम्बन्ध से पूर्व अनुभूत असह्य दुःखों को सर्वथा भूल गया था। पूर्वोपार्जित प्रबल-पुण्यका सूर्योदय पराकाष्ठा को पहुँचा मालूम होता था इस समय आन्तरिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए उन्हें किसी ज्ञानवान् विरक्त आत्मा सद्गुरु के समागम की आवश्यकता थी। मानो वह पूर्ण करने के लिए ही उनके पुण्य से प्रेरित हो पार्श्वनाथ प्रभु के शिष्य महात्मा ***चंद्रयशा केवली*** बिचरते हुए भव्य जीवों को उपदेश करते हुए वहाँ पर आ पधारे।

सागर-तिलक नगर के बाहरी में उद्यान में, आज बहुत नगर निवासियों का जमघट लगा हुआ है। शहर के बड़े-बड़े आदमी उत्साह और भक्ति भाव से प्रेरित हो वहां जा रहे हैं। इस समय राजसभा में आकर एक बागवान ने राजा से प्रार्थना की–महाराज! आज शहर के बाहर महातपस्वी और कैवल्य ज्ञानधारी एक चंद्रयशा नामक महात्मा पधारे हें। यह समाचार सुनतेही सारा राजकुटुम्ब इस प्रकार प्रसन्न हो उठा जिस तरह सूर्य के आगमन से कमल

समुदाय विकसित हो उठता है। उन्होंने जरा भी बिलम्ब न किया, सारेही राज-कुटुम्ब को साथ लेकर गुरुमहाराज को वन्दना करने के लिये उनके दर्शनार्थ महाराज शूरपाल, महाराज वीरधवल वहां आ पहुँचे। राजा आदि तमाम जनता के उपस्थित होने पर कृपाके समुद्र ज्ञानभानु महात्मा चंद्रयशा केवली भगवान ने जगतजनों पर करुणा लाकर संसार के जन्म-जरा-मरण के बन्धनों को छेदन करनेवाली धर्म देशना प्रारंभ की ओर आत्माका वास्तविक स्वरूप बतलाया।

सुख प्राप्ति की इच्छा रखनेवाले सज्जनो! आपको यह बात स्मरण रखनी चाहिये कि संसार के तमाम सुख निमित्तजन्य होने के कारण विनश्वर हैं। आत्माका असली स्वरुप प्राप्त किए बिना मनुष्य को सच्चा सुख प्राप्त नहीं होता। उस सुख को प्राप्त करने के लिये ज्ञानवान पुरुषों ने दो मार्ग बतलाये हैं। एक संन्यस्त मार्ग और दूसरा गृहस्थ धर्म है। जिस मनुष्य में उस सुख को प्राप्त करने की तीव्र इच्छा और उत्सुकता प्राप्त हुई हो वह मनुष्य आत्मा के साथ कर्मबन्धन करानेवाले तमाम भावों का सर्वथा परित्याग कर प्रबल पुरुषार्थ द्वारा संन्यस्त मार्ग से उसे प्राप्त कर सकता है। जिसमें उतना त्याग करने का प्रबलपुरुषार्थ न हो वह मनुष्य, गृहस्थ-धर्म में रहकर उसके योग्य नियमों को धारण कर धीरे-धीरे आत्मस्वरूप की ओर गमन करते हुए उस सुख के नजदीक पहुँच जाता है। गृहस्थ-धर्म के योग्य ज्ञानी पुरुषों ने मुख्यतया व्यवहार और निश्चय नय से बारह व्रत बतलाये हैं।

(१) दूसरे प्राणी को अपने समान समझ कर उसकी हिंसा न करे। उसे किसी भी प्रकार की पीड़ा न पहुँचावे, इसे व्यवहार नय से प्रथम व्रत या नियम कहते हैं। और यह प्राणी अन्य प्राणियों की हिंसा द्वारा कर्म बन्धन करके दुःख का भागी बनता है इसलिए आत्मा के साथ लगे हुए कर्मों को दूर करना आवश्यक है। तथा यह आत्मा अनेक स्वाभाविक गुणवाली है, अतः हिंसा आदि प्रवृत्तियों द्वारा कर्म ग्रहण करना इसका स्वाभाविक धर्म नहीं है। इस प्रकार की ज्ञानबुद्धि से हिंसा के त्यागरूप आत्मगुणों को ग्रहण करने का निश्चय करना इसे निश्चय नयकी अपेक्षा प्रथम स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत कहते हैं।

(२) लोक निन्दित असत्य भाषणसे निवृत्त होना यह व्यवहार से दूसरा व्रत कहलाता है। त्रिकाल ज्ञानी, सर्वज्ञ, देव के कथन किये हुए जीव अजीव के स्वरूप को अज्ञानतावश विपरीत कथन करना और पौद्गलिक परवस्तु को आत्मीय कहना यह सरासर मृषावाद है। अतः इस प्रकार के मृषावादसे निषृत्त होना इसे निश्चय नय की अपेक्षा दूसरा व्रत कहा है। इस पूर्वोक्त व्रत के सिवा अन्य व्रतों की यदि विराधना भी हो जाय तो उसका चारित्र नष्ट हो जाता है। किन्तु ज्ञान और दर्शन ये दोनों कायम रहते हैं। पर उपरोक्त दूसरे व्रत की विराधना होने से ज्ञान दर्शन और चारित्र ये तीनों ही जो आत्मीय सुख की प्राप्ति करते हैं, नष्ट हो जाते हैं।

(३) किसी की मालकियत की वस्तु मालिक के दिये बिना या उसकी आज्ञा बिना ग्रहण न करना इसे व्यवहार नयसे तीसरा व्रत कहते हैं। परन्तु द्रव्य से परवस्तु ग्रहण न करने के उपरान्त अन्तः करण में पुण्य तत्व के ब्यालिस भेद प्राप्त कर तेईस विषय तथा कर्म की आठ वर्गणायें, वग़ैरह अनात्मीय परवस्तु ग्रहण तक भी न करना इसे निश्चय नयकी अपेक्षा तीसरा व्रत कहते हैं।

(४) गृहस्थ धर्म में स्वदार संतोष और परस्त्री का त्याग, तथा साधु मुनिराज के लिये सर्वस्त्री मात्रका परित्याग करना यह व्यवहारसे चतुर्थ व्रत कहलाता है। परन्तु विषय की इच्छाका, और तृष्णा का परित्याग निश्चय रूप से चतुर्थ व्रत होता है।

(५) गृहस्थ धर्म में नव प्रकार के परिग्रह का परिमाण करना और संन्यस्त मार्ग में सर्व प्रकार के परिग्रह का त्याग करना, व्यवहार से पांचवाँ व्रत कहलाता है। भाव कर्म जो राग द्वेष, अज्ञान तथा आठ प्रकार के द्रव्यकर्म और देहकी मूर्च्छा एवं पाँचों इन्द्रयों के विषयों के परित्याग को ज्ञानवान् पुरुषों ने निश्चय नय से पांचवाँ व्रत कथन किया है।

(६) दिशाओं में आने जाने का परिमाण करना यह व्यवहार से छट्टा व्रत कहलाता है। और नरकादि चतुर्गति रूप कर्म के परिणाम को जानकर उस ओर उदासीन भाव रखना तथा सिद्ध अवस्था की तरफ उपादेय भाव रखना इसे निश्चय नय से छट्ठा व्रत कहते हैं।

(७) भोगोपभोग व्रत में सर्व-भोग्य-वस्तुओं का परिमाण करना यह व्यवहार से सातवाँ व्रत कहलाता है। व्यवहार नय से कर्म का कर्त्ता तथा भोक्ता आत्मा ही है। और निश्चय नय से कर्तापन कर्मकाही है, क्यों कि मन वचन और शरीर का योग ही कर्म का आकर्षण करता है। एवं भोक्तापन भी योग में ही रहा हुआ है। अज्ञानता के कारण आत्माका उपयोग मिथ्यात्वादि कर्म ग्रहण करने के साधन में मिल जाता है परन्तु परमार्थ वृत्ति से आत्मा कर्म पुद्‌गलों से भिन्न ही है। आत्मा ज्ञानादि गुणों की आविष्कर्ता और भोक्ता है। संसार में जितने पौद्‌गलिक पदार्थ हैं वे जगतवासी अनेक जीवों के भोगे हुए हैं। अतएव विश्वभर के तमाम पदार्थ उच्छिष्ठ भोजन के समान होने के कारण उन पुद्‌गलों को भोगोपभोग रूप से ग्रहण करना आत्मीय धर्म नहीं है। इस प्रकार के चिंतन को निश्चय नय से सातवाँ व्रत कहते हैं।

(८) बिना प्रयोजन पापकारी आरम्भ से निवृत्त होना इसे व्यवहार से आठवाँ अनर्थदण्ड विरमण-व्रत कहते हैं। मिथ्यात्व, अविरति, कषाय और मन वान शरीर के योग इन चारों के उत्तर भेद सत्तावन होते हैं। आत्मा को मलीन कर अपने स्वरूप से वंचित करने वाले कर्म का आगमन इन पूर्वोक्त हेतुओं से ही होता है। और कर्मो के द्वारा ही आत्मा हेतुओं को त्यागना इसे निश्चय नय से आठवां अनर्थ दण्ड विरमण व्रत कहते हैं।

(९) आरम्भ कार्य को त्याग कर जो सामाजिक कार्य किया जाता है उसे व्यवहार से नवम व्रत कहते हैं। परन्तु ज्ञानादि गुणों की मुख्य सत्ता धर्म के द्वारा सर्वजीवों को समान समझ कर उनपर सम-परिणाम रखने को निश्चय नय से नवम सामायिक व्रत कहते हैं।

क्रमशः

शोक समाचार

शान्त मूर्ति, समाजसेवी, दीर्घ तपस्वी, जैन भवन के वर्तमान अध्यक्ष तथा स्थायी ट्रस्टी श्री नरेन्द्रपत सिंह दूगड़ का देहावसान मंगलवार दिनांक १ जनवरी २००२ कलकत्ता में हो गया है। आपका जन्म ०२-०१-१९१६ में मुर्शिदाबाद निवासी बुद्ध सिंह जी, प्रताप सिंह जी के परिवार में हैरावत स्टेट के जमींदार सुरपत सिंह जी दूगड़ की धर्म पत्नी मैना कुमारी देवी के कुक्षी से हुआ। आपकी शिक्षा प्रेसिडेंसी कॉलेज में हुई। आप पिताजी के साथ जमींदारी का काम-काज देखते थे। आपने लगातार १३५ बार ओलीजी की तपस्या, ६९ बार (९ उपवास) अठ्ठाई तप किये। आपने एकबार ३८ दिन का मासखामण तप भी किया था। आप कलकत्ता के जैन भवन के वर्त्तमान अध्यक्ष तथा स्थायी ट्रस्ट्री थे। आपके पास प्राचीन तथा नवीन सिक्कों का उल्लेखनीय संग्रह था तथा इसके सम्बन्ध में अच्छी जानकारी रखते थे। इसलिए आपको न्यूमिसमेटिक सोसाइटी ऑफ कलकत्ता का फाउन्डर मेम्बर तथा सभापति (प्रेसीडेन्ट) बनाया गया। आप एसियाटिक सोसाइटी के भी सदस्य तथा अनेक संस्थाओं के सदस्य थे। आपको पुराने दुर्लभ वस्तुओं के संग्रह का प्रशंसनीय शौक था।

आपके तीन पुत्र श्री विजय पतसिंह, श्री शांति पति सिंह, श्री जयपति सिंह दुगड़ तथा एक पुत्री श्रीमती बीना नाहटा है। आपकी धर्म पत्नी का २०-०८-१९७९ में देहान्त हो गया था। आपके जीवन में ३ बड़े आपरेशन होने के उपरान्त भी प्रत्येक बार आत्म विश्वास, देवगुरु धर्म के प्रति श्रद्धा, भक्ति तथा अटूट विश्वास के कारण उपवास, आम्बिल तथा अठ्ठाई तपस्या में विघ्न नहीं आने दिया।

दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु एक सभा का आयोजन आगामी शनिवार दिनांक ५ जनवरी २००२ को दिन के ३ बजे श्री जैन भवन, पी-२५ कलाकार स्ट्रीट कलकत्ता ७०० ००७ में किया गया। जिसमें कलकत्ता समाज एवं अनेक संस्थाओं के ट्रस्टी एवं प्रतिनिधि उपस्थिति रहे।

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139,(Resi) 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: (O) 247-6874, (Resi) 244-3810

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Kolkata - 700 007
Ph: 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box:16127,
Kolkata -700 017
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 240 0098, 2471833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2208967, (Resi) 2471750

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goalpara, Assam

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 455-355-3586

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 226-2418, (Resi) 464-2783.

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Kolkata - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 235 0623, (Resi) 239-6823

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road,
Kolkata - 700 007
Ph: 238-8677/1647,239-6097

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 348-8576/0669/1242
(Resi) 225-5514, 237-8208, 229-1783

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Kolkata - 700 054
Ph: 352-8940/334-4140 (Resi) 352-8387/9885

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Ph: (O) 282-4649, (Resi) 247-2670

ASHOK KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Kolkata
Ph: 237-4132/236-2072

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata, Ph: 464-1186,

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor,
24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071
Ph: 247-7450/5264

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 238-4755, (Resi) 238-0817

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in
sona@cal3.vsnl.net.in

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 233-1766/238-8846
Mobile: 9831028566
Resi : 355-9641/7196

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2209755
Resi: 464-3235/1541, Fax: (033) 4640547

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 282-8181

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Kolkata - 700 068
Ph: 472-0610

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 239-1408

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street Kolkata - 700 001,
Ph: 235 2759 Fax: 033-252902

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203 /1 M. G. Road, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 238-9356/0950 (Fact). 557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 229-5047, 9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021
Office: Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Kolkata -700 001, Ph: 220-2389/3570/3569

DHARAM CHAND SARAOGI
'Jain House' 8/1 Esplanade East
Kolkata - 700 069

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East
Kolkata - 700 069

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

SHREE SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Phone : (Off) 247-7880, 247-8663
(Res) 247-8128, 247-9546

DELUXE TRADING CORPORATION
Distinctive Printers
36, Indian Mirror Street Kolkata - 700 013
Ph: 244-4436

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 249-0103

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 235-2076, 235-5701

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2296256/8730/1029
Resi: 247 6526/6638/2405126
Telex: 021 2333, ARBI IN, Fax : 226 0174

MANI DHARI TAR UDYOG
Manufactureres of Flexible Ribbon,
Hookup, Main Cards, P.V.C. Insulated Wires and cables
JHANWAR LAL JAIN
96, Old Roshan Pura, Najaf Garh
New Delhi - 110 043, Ph: (O) 501-6527
(Resi) 545-3415, 542-3304
Mobile: 9811075330

SPACE & WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Kolkata - 700 001 Fax : 242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

H. R. ELECTRONICS

Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare Parts
Siemens, English Electric L.T./L.K.B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No -712A
South Block, Kolkata - 700 001
Room No.- 314, 3rd Floor
Phone : (O) 235 5009/1299, (R) 660-4332

BOTHRA & BOTHRA

12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 230 0216, (R) 235 9657/9312

CHUNILAL ASHOK KUMAR

30, Cotton Street, 3rd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : 238 7764, (R) 666 4541, 530 9286

ASHOK TRADING COMPANY

Authorised Dealers of
J. K. Steel File. Drills. I. T. Drills. Tapes Center
BIPICO - ECLIPSE Hacksaw Bledes
"FREEMANS" GK Measuring Tapes, 18/C Sukeas Lane,
Kolkata - 700 001, Phone : 242-2345, 242-4461

D. K. SYNTHETICS

Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 232 6040, (R) 684181

S. P. SYNTHETICS

House of Exclusive Shirtings
38 Armenian Street, 1st Floor, Kolkata - 700 001
Phone : 235 7312, (Shop) 230 1180 (Resi) : 241 6831

JAI CHAND VINOD KUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : 238 3328/9678, 239 3450
Fax : 239 3450, 247 7526
Telex : 217761 JVS-IN Grams MINNI-BROS

S. VINAY CHAND
Vinay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 238 1388 (R) 247 6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Kolkata - 700 007

BOTHRA SHIPPING SERVICES
2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Fax No. 220-6400 Ph: 220-7162
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Kolkata - Ph: 284-0612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Kolkata - 700 073

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 239-7607)

अangan
Rajasthan Village Theme Resturant at Swabhumi
89/c, Narkeldanga Main Road, Kolkata - 700 054
Ph : 359 2031, e-mail : www.jiggis.com

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
सारांश कि अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

Phone:
226-0881
226-0883
226-6283
226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 634-6441/644-6442
Fax: 6346287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

卐

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 514-4496, 513-1086, 513-2203
Fax: 91-011-5131184
e-mail: laxmanjariwala@gems.vsnl.net.in

With Best Compliments.....

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan , Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia,

卐

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin - 742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No.: 53232
Cal. Phone: No.: 033 2300432, 5213863

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbus would have feared to tread)

Subhash
Projects and
Marketing
Limited

MAN IN PARTNERSHIP WITH NATURE

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Calcutta-700016 Ph:(033)245-7562. Registered Office: Subhash House, F-27 2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020 Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8 2 Lisor Road, Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50^{0} C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metre, no less.

Building a floating pumping station on the fierce of Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproff Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

लाड़ा देवी ग्रन्थमाला

१२ सी, लार्ड सिन्हा रोड़

कोलकाता – ७०० ००७

उद्देश्य

अप्रकाशित, प्राचीन, दुर्लभ, ज्ञानवर्धक एवं जनोपयोगी साहित्य प्रकाशन संवर्धन एवं संयोजन

ग्रन्थमाला से प्रकाशित पुस्तकें

श्रवण बेलगोल इतिहास के परिपेक्ष्य में
निर्माल्य ग्रहण पाप है
तीर्थ मान चित्र
भक्तामर स्तोत्र
जैन प्रश्नोत्तर माला
जैन पूजा पाठ चौबीस पूजा संग्रह
अक्षय विधि व्रत कथा एवं पूजा
(सुहाग दशमी पूजा)
सरल जैन विवाह विधि
भव पार चलोगे
भक्तामर स्तोत्र पूजा सहित
दीपावली पूजन
तमिलनाडू के जैन तीर्थ
दिव्य ज्योति
जैन व्रत विधि एवं कथा
तत्वार्थ सूत्र
मुझे सुखी होना है
(चिन्तन के कुछ क्षण)-
पंच स्त्रोत
समाधि तंत्र

卐

श्री राजकुमार अभिषेक कुमार सेठी

कोलकाता

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007

English :

1.	Bhagavati-sutra-Text edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:		
	Vol - 1 (satakas 1- 2)	Price : Rs.	150.00
	Vol - 2 (satakas 3- 6)		150.00
	Vol - 3 (satakas 7- 8)		150.00
	Vol - 4 (satakas 9- 11)		150.00
2.	James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Kolkata ; 1977. pp. x+82 with 45 plates (It is the glorification of the sacred mountain Satrunjaya.)	Price : Rs.	100.00
3.	P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani.	Price : Rs.	15.00
4.	Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord,	Price : Rs.	15.00
5.	Verses from Cidananda Translated by Ganesh Lalwani	Price : Rs.	15.00
6.	Ganesh Lalwani - Jainthology	Price : Rs.	100.00
7.	Lalwani and S. R. Banerjee- Weber's Sacred Literature of the Jains	Price : Rs.	100.00
8.	Prof. S. R. Banerjee Jainism in Different States of India	Price : Rs.	100.00

Hindi :

1.	Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti Ki Kavita, Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	20.00
3.	Ganesh Lalwani - Nilanjana, Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	30.00
4.	Ganesh Lalwani - Chandan-Murti Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	50.00

5.	Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price : Rs.	60.00
6.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Raat,	Price : Rs.	45.00
7.	Ganesh Lalwani -- Panchdasi.	Price : Rs.	100.00
8.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price : Rs.	30.00
9.	Smt. Lata Bothra - Bhagavan Mahavira Aur Prajatantra	Price : Rs.	15.00
10.	Smt. Lata Bothra - Sanskriti Ka Adi Shrote, Jain Dharm	Price : Rs.	24.00
11.	Prof. S.R. Banerjee - Prakrit Vyakarana Praveshika	Price : Rs.	20.00

Bengali :

1.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani-Sraman Sanskriti/ Kavita	Price : Rs.	20.00
3.	Puran Chand Shymsukha-Bagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price : Rs.	15.00
4.	Prof. Satya Ranjan Bandyopadhyay Prasnottare Jaina-Dharma	Price : Rs.	20.00
5.	Dr. Jagatram Bhattacharya Das Baikalik Sutra	Price : Rs.	25.00
6.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Mahavir Kathamrita	Price : Rs.	20.00
7.	Sri Yudhishthir Majhi Sarak Sanskriti O Puruliar Purakirti	Price : Rs.	20.00

Some Other Publications :

1.	Smt. Lata Bothra - Vardhamana Kaise Bane Mahavir	Price : Rs.	15.00
2.	Smt. Lata Bothra - Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan	Price : Rs.	10.00
3.	Smt. Lata Bothra - Bharat Me Jain Dharma	Price : Rs.	
4.	Acharya Nanesh - Samata Darshan Aur Vyavhar (Bengali)	Price : Rs.	
5.	Shri Suyesh Muniji - Jain Dharma Aur Shasnavali (Bengali)	Price : Rs.	50.00
6.	K.C.Lalwani - Sraman Bhagwan Mahavira	Price : Rs.	25.00

अहिंसा ही परमफल है, परममित्र है, परम सुख है।
अहिंसा कायरों का नहीं वीरों का अस्त्र है।

卐

arcadia shipping limited

We Own & Operator tramp service on
-M.V.ARCADIA PROGRESS (35224 DWT)
Besides Owing & Operating 8 Self Propeled + 1
Dumb Barges
of between 550-1250 DWT.

We are Associates/General Agents in India for:
Winco Maritime Limited, London
-Puyvast Chartering BV., The Netherlands
-National Petroleum Construction Co., Abu Dhabi
******
We are agents at Mangalore for:
The Shipping Corporation of India Ltd.
(The Indian National Line)
******
Regd. & head Office:
222, Tulsiani Chambers Nariman point,
Mumbai-400 021.
Tel: 2831540/49, 2020416/418/2822765.
Fax: 2872664.
Tlx: 86567 ASPL IN / 83059 CONT IN, / CABLE:
SHIPONTIME
E.Mail: vns@arcadiashipping.com

******

Offices at all major Indian Ports & New Delhi &
Bangalore.

Tech/W.B./R.N.P.-45
Vol. XXV No. 10 TITTHAYARA January 2002
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचानी चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225